खंड A

बिहार राज्य विशेष

खंड-A: बिहार राज्य विशेष

1. बिहार : सामान्य परिचय .... 3 – 11
2. बिहार : भौगोलिक स्थिति व उच्चावच .... 12 – 14
3. बिहार : जलवायु एवं मृदा .... 15 – 17
4. बिहार : अपवाह तंत्र एवं सिंचाई .... 18 – 26
5. बिहार : कृषि व पशुपालन .... 27 – 37
6. बिहार : वन एवं वन्यजीव अभयारण्य .... 38 – 44
7. बिहार : खनिज संसाधन .... 45 – 48
8. बिहार : औद्योगीकरण एवं नियोजन .... 49 – 55
9. बिहार : ऊर्जा संसाधन .... 56 – 61
10. बिहार : परिवहन एवं संचार .... 62 – 68
11. बिहार : जनगणना–2011 .... 69 – 74

1 बिहार : सामान्य परिचय
(Bihar : General Introduction)

बिहार : एक दृष्टि	
राज्य का नाम	बिहार, ऐसा माना जाता है कि इस क्षेत्र में बौद्ध मठों (विहारों) की अधिकता के कारण, इस क्षेत्र का नाम बिहार पड़ा। उल्लेखनीय है कि यह क्षेत्र प्राचीन समय में बौद्ध धर्म का प्रमुख केंद्र रहा है।
राज्य की स्थापना (बिहार दिवस)	22 मार्च, 1912
राज्य की राजधानी	पटना (प्राचीन समय में पाटलिपुत्र, पुष्पपुर, कुसुमपुर तथा अजीमाबाद इसके अन्य नाम रहे हैं।)
राज्य की भौगोलिक स्थिति	24°20'10" से 27°31'15" उत्तरी अंक्षाश तथा 83°19'50" से 88°17'40" पूर्वी देशांतर के मध्य
राज्य का क्षेत्रफल	94,163 वर्ग किमी. (देश का 13वाँ सबसे बड़ा राज्य)
उत्तर से दक्षिण की लंबाई	345 किमी.
पूर्व से पश्चिम की लंबाई	483 किमी.
राज्य की सीमा से लगे राज्य	3, पश्चिम बंगाल (पूर्व), उत्तर प्रदेश (पश्चिम) तथा झारखंड (दक्षिण)।
राज्य की सीमा से लगा देश	नेपाल (उत्तर में)
कुल भौगोलिक क्षेत्रफल (संपूर्ण भारत में)	2.86%
नेपाल की सीमा से लगे ज़िले	7, पश्चिमी चंपारण, पूर्वी चंपारण, सीतामढ़ी, मधुबनी, सुपौल, अररिया तथा किशनगंज।

3 बिहार : जलवायु एवं मृदा
(Bihar : Climate and Soil)

किसी भी स्थान के वातावरण की दीर्घकालिक स्थिति को जलवायु के माध्यम से समझा जाता है। बिहार की जलवायु में भी अन्य राज्यों की तरह क्षेत्रीय विविधता दिखाई देती है। एक ही समय में बिहार के कुछ क्षेत्र जलप्लावित रहते हैं जबकि दूसरी तरफ सूखा का प्रकोप रहता है। इस प्रकार की विविधता जलवायु द्वारा निर्धारित होती है, जिसका स्पष्ट प्रभाव यहाँ की मृदा पर भी पड़ता है।

जलवायु (Climate)

- बिहार में मानसूनी प्रकार की जलवायु पाई जाती है। अपने अक्षांशीय विस्तार के आधार पर यह उपोष्ण जलवायु क्षेत्र के अंतर्गत आता है।
- यहाँ की जलवायु में महाद्वीपीय लक्षण पाए जाते हैं।
- इसके पूर्वी भाग में आर्द्र तथा पश्चिमी भाग में अर्द्धशुष्क जलवायु मिलती है।
- कोपेन के जलवायु वर्गीकरण के आधार पर बिहार का उत्तरी भाग Cwg तथा दक्षिणी भाग Aw जलवायु के अंतर्गत आता है।
- अक्षांशीय दृष्टि से बिहार कर्क रेखा के उत्तर में स्थित है।
- राज्य के उत्तरी भाग में हिमालय की स्थिति का प्रभाव पड़ता है।
- बंगाल की खाड़ी से होकर आने वाली वायु (वाष्पयुक्त) हिमालय से टकराकर वर्षा करती है।
- शरद ऋतु में पछुआ विक्षोभ के कारण शीतोष्ण चक्रवातीय वर्षा का प्रभाव पड़ता है।
- बिहार की जलवायु को निम्नलिखित कारक प्रभावित करते हैं–

हिमालय की अवस्थिति, कर्क रेखा से दूरी, बंगाल की खाड़ी से इसकी निकटता, ग्रीष्मकालीन तूफान तथा दक्षिण-पश्चिमी मानसून की क्रियाशीलता। बिहार में मुख्य रूप से तीन ऋतुएँ पाई जाती हैं–

ग्रीष्म ऋतु (मार्च से जून के मध्य तक)
[Summer Season (March to mid June)]

- सूर्य के उत्तरायण होने के कारण इस समय तापमान में बढ़ोतरी होती जाती है। यहाँ मई का महीना सर्वाधिक गर्म होता है।
- ग्रीष्म ऋतु में बंगाल की खाड़ी में उत्पन्न होने वाले उष्णकटिबंधीय चक्रवातों के कारण बिहार के पूर्वी हिस्से में बारिश होती है। इस वर्षा को 'नार्वेस्टर' कहा जाता है।
- बिहार का सबसे गर्म स्थान गया ज़िले में है।
- तापमान में वृद्धि होने के साथ-साथ मैदानी भाग निम्नभार का क्षेत्र बन जाता है जिस कारण ग्रीष्म ऋतु में आर्द्रता में कमी हो जाती है तथा पश्चिम में पूर्व शुष्क गर्म हवा (लू) चलने लगती है।

वर्षा ऋतु (मध्य जून से मध्य अक्टूबर तक)
[Rainy Season (Mid June to mid October)]

- बिहार में मानसून का आगमन मध्य जून से होता है। यहाँ जुलाई एवं अगस्त में अत्यधिक वर्षा होती है।
- बिहार में वर्षा मुख्य रूप से दक्षिण-पश्चिमी मानसून के कारण होती है। यहाँ की औसत वार्षिक वर्षा 125 से.मी. है।
- यहाँ सर्वाधिक वर्षा किशनगंज ज़िले में, जबकि सबसे कम वर्षा पटना के पश्चिम में स्थित त्रिकोणीय भूखंड पर होती है।
- इस राज्य में मानसून प्रत्यावर्तन का काल मध्य अक्टूबर से नवंबर तक होता है।

शीत ऋतु (नवंबर से फरवरी तक)
[Winter Season (November to February)]

- इस ऋतु में भूमध्यसागरीय क्षेत्र में उत्पन्न होने वाले चक्रवातीय तूफानों से झंझावातीय वर्षा होती है।
- यह वर्षा रबी की फसल के लिये लाभदायक मानी जाती है।
- बिहार में शीत ऋतु का सर्वाधिक ठंडा महीना जनवरी का होता है। इस समय औसत न्यूनतम तापमान 7.5° सेंटीग्रेड के आस-पास रहता है।

बिहार में कृषि जलवायु क्षेत्र

कृषि जलवायु की दृष्टि से बिहार राज्य को 4 भागों में विभाजित किया जाता है- 1. पश्चिमोत्तर का मैदान, 2. पूर्व का मैदानी भाग, 3. दक्षिण-पश्चिम का मैदान, 4. दक्षिण का पठारी क्षेत्र

मृदा/मिट्टी (Soil)

बिहार सरकार के कृषि अनुसंधान विभाग के द्वारा भौतिक, रासायनिक तथा संरचनात्मक विशेषताओं के आधार पर यहाँ की मृदा को तीन भागों में विभाजित किया गया है–

1. गंगा के उत्तरी मैदान की मृदा
2. गंगा के दक्षिणी मैदान की मृदा
3. दक्षिणी पठार की मृदा

गंगा के उत्तरी मैदान की मृदा
(Soil of Northern Plain of Ganga)

गंगा के उत्तरी मैदान में पाई जाने वाली मृदा जलोढ़ या अपोढ़ प्रकार की होती है। इस मिट्टी में अभ्रक, लौह अयस्क, क्वार्ट्ज, फेल्सफार जैसे खनिज प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। गंगा के उत्तरी मैदान में तीन प्रकार की मृदा प्रमुख रूप से पाई जाती है–

9 बिहार : ऊर्जा संसाधन
(Bihar : Energy Resources)

ऊर्जा किसी भी राज्य की आर्थिक संवृद्धि व विकास के लिये अत्यंत आवश्यक है। बगैर इसके किसी भी प्रकार की आर्थिक गतिविधि (विशेषकर उत्पादन संबंधी) संपन्न नहीं हो सकती है। इस संदर्भ में बिहार अत्यंत पिछड़ा हुआ है, विशेषकर वर्ष 2000 में बँटवारे के बाद ऊर्जा संपन्न क्षेत्रों के झारखंड में चले जाने के कारण। हालाँकि, हाल के वर्षों में बिहार के ऊर्जा परिदृश्य में सुधार हुआ है, लेकिन फिर भी अन्य राज्यों की तुलना में यह अत्यंत कम है। आज भी बिहार को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु करीब 70% बिजली, केंद्र सरकार की विद्युत उत्पादन इकाइयों से क्रय करनी पड़ती है।

हाल के वर्षों में पूरे राज्य में बिजली की उपलब्धता के मामले में ज़बरदस्त प्रगति हुई है, जैसे- 2012-13 से 2018-19 के बीच बिजली के प्रति व्यक्ति खपत 114 प्रतिशत बढ़ी है।

ऊर्जा क्षेत्र (Energy Sector)

- राज्य में बिजली की अनुमानित चरम मांग में काफी सुधार हुआ है जो 2012–13 के 2650 मेगावाट से 2018–19 में 5,300 मेगावाट हो गई है; अर्थात् पिछले छः वर्षों में यह लगभग 100 प्रतिशत बढ़ी है। वहीं मांग की चरम पूर्ति में लगभग 185 प्रतिशत वृद्धि हुई है जो 2012–13 के 1802 मेगावाट से बढ़कर 2018–19 में 5139 मेगावाट हो गई।
- वर्ष 2012–13 तक राज्य में लगभग 32 प्रतिशत की सर्वोच्च कमी (पीक डेफिसिट) रहती थी जो काफी घटकर 2018–19 में लगभग 3 प्रतिशत रह गई। बिजली की औसत उपलब्धता ग्रामीण क्षेत्रों में 6–8 घंटे से बढ़कर 20–22 घंटे और शहरी क्षेत्रों में 10–12 घंटे से बढ़कर 22–24 घंटे हो गई। इसके चलते राज्य में बिजली की प्रति व्यक्ति खपत 2012–13 के 145 किलोवाट-आवर से बढ़कर 2018–19 में 311 किलोवाट-आवर हो गई जो छः वर्षों में 114 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाती है।
- वर्ष 2021–22 तक बिहार में बिजली की मांग लगभग 6900 मेगावाट और ऊर्जा की वार्षिक मांग 3984.1 करोड़ यूनिट होना अनुमानित है। वर्ष 2018 में राज्य में बिजली की उपलब्ध क्षमता 3889 मेगावाट थी जो 22.6 प्रतिशत बढ़कर 2019 में 4767 मेगावाट हो गई। बिजली की बढ़ी हुई मांग को पूरा करने के लिये राज्य सरकार 2021–22 तक विभिन्न स्रोतों से 5335 मेगावाट की अतिरिक्त क्षमता चरणबद्ध ढंग से बढ़ाने की योजना पहले ही बना चुकी है। वर्ष 2021–22 तक बिहार में बिजली की कुल उपलब्ध क्षमता 10,102 मेगावाट हो जाने की आशा है, जिसमें से 6421 मेगावाट (63.6 प्रतिशत) पारंपरिक बिजली होगी और शेष 3681 मेगावाट (36.4 प्रतिशत) अपारंपरिक।
- बिहार में बिजली का उत्पादन और खरीद (केंद्रीय वितरण जनित ह्रास को छोड़कर) चार वर्षों में लगभग 30 प्रतिशत बढ़कर 2015–16 के 2167.7 करोड़ यूनिट से 2018–19 में 2811.2 करोड़ यूनिट हो गई। बिजली की बिक्री बढ़ने के साथ राजस्व संग्रहण भी बढ़ा है। वर्ष 2017–18 में लागत वसूली लगभग 80 प्रतिशत थी जो 2018–19 में 86 प्रतिशत से भी अधिक हो गई है।
- मार्च 2019 तक राज्य में कुल 4767 मेगावाट विद्युत उत्पादन की क्षमता थी। इसमें से 82 प्रतिशत कोयला आधारित तापविद्युत से, 11 प्रतिशत जलविद्युत से और शेष 7 प्रतिशत नवीकरणीय स्रोतों से उपलब्ध थी। स्वामित्व के लिहाज़ से देखें तो सर्वाधिक 86 प्रतिशत हिस्सा केंद्रीय क्षेत्र का, 13 प्रतिशत निजी क्षेत्र/ स्वतंत्र विद्युत उत्पादकों का और 1 प्रतिशत राजकीय क्षेत्र का था।
- नवीकरणीय ऊर्जा वाली विद्युत परियोजनाओं के उपयोग को प्राथमिकता देने के लिये राज्य सरकार ने बिहार नवीकरणीय ऊर्जा विकास अभिकरण (ब्रेडा) नामक अभिकरण बनाया है। यह अभिकरण राज्य में बिजली उत्पादन के लिये अपारंपरिक स्रोतों के उपयोग वाली परियोजनाओं के क्रियान्वयन में लगा है। ब्रेडा द्वारा बिहार में अनेक ऊर्जा दक्षता योजनाएँ भी चलाई जाती हैं।

वर्तमान ऊर्जा परिदृश्य एवं संभावनाएँ
(Current Energy Scenario And Possibilities)

बिहार में बिजली की प्रति व्यक्ति खपत के मामले में ज़िलों के बीच काफी अंतर है। वर्ष 2014-15 में बिजली की कुल खपत 1537.5 करोड़ यूनिट थी जो चार वर्षों में 74 प्रतिशत से भी अधिक वृद्धि दर्शाते हुए 2018-19 में बढ़कर 2680.0 करोड़ यूनिट हो गई। वर्ष 2018-19 में बिजली की खपत के मामले में शीर्ष तीन ज़िले थे- पटना (523.6 करोड़ यूनिट), गया (163.3 करोड़ यूनिट), नालंदा (112.8 करोड़ यूनिट) दूसरी ओर सबसे पीछे के तीन ज़िले- शेखपुरा (19.0 करोड़ यूनिट) अरवल (16.6 करोड़ यूनिट) और शिवहर (8.6 करोड़ यूनिट) थे। वहीं, बिजली की खपत में सबसे अधिक वृद्धि दर्ज करने वाले तीन ज़िले नवादा (36.5 प्रतिशत), औरंगाबाद (29.7 प्रतिशत) और सिवान (28.8 प्रतिशत) हैं।

11 बिहार : जनगणना–2011
(Bihar : Census–2011)

सर्वप्रथम बिहार में जनगणना की शुरुआत वर्ष 1872 में हुई थी। हालाँकि नियमित जनगणना (प्रत्येक दस वर्ष के अंतराल पर) की शुरुआत वर्ष 1881 में हुई, जो तब से निरंतर हो रही है। इस क्रम में वर्ष 2011 की जनगणना बिहार की 14वीं जनगणना है। इस जनगणना से संबंधित महत्त्वपूर्ण आँकड़े व तथ्य इस प्रकार हैं–

बिहार जनगणना 2011 (एक दृष्टि में)			
	भारत	बिहार	राष्ट्रीय संदर्भ में बिहार के आँकड़े
कुल संख्या	1,21,08,54,977	10,40,99,452	8.6% (देश की कुल जनसंख्या का)
जनसंख्या वृद्धि दर	17.7%	25.4%	7.7% अधिक है
जनसंख्या घनत्व	382	1106 (2001 में 881)	724 अधिक है (देश में प्रथम स्थान)
लिंगानुपात	943	918 (2001 में 919)	25 से कम है
शिशु लिंगानुपात	919	935	16 अधिक है
साक्षरता	73.0%	61.8%	11.2% कम है (सभी राज्यों में सबसे पीछे)
पुरुष	80.9%	71.2%	पुरुष और महिला साक्षरता में भी बिहार सभी राज्यों से पीछे है।
महिला	64.6%	51.5%	
SC जनसंख्या (प्रतिशत में)	16.6% (देश की कुल जनंसख्या का)	15.9% (बिहार की कुल जनंसख्या का)	
ST जनसंख्या (प्रतिशत में)	8.6% (देश की कुल जनसंख्या का)	1.3% (बिहार की कुल जनंसख्या का)	
नगरीकरण (प्रतिशत में) ग्रामीण क्षेत्र (प्रतिशत में)	31.2% 68.8%	11.3% 88.7%	सर्वाधिक ग्रामीण जनसंख्या वाले राज्यों में बिहार, उत्तर प्रदेश के बाद दूसरे स्थान पर है जबकि प्रतिशत के मामले में बिहार हिमाचल प्रदेश के बाद दूसरे स्थान पर है।

कुल जनसंख्या (Total population)

- जनगणना 2011 के अंतिम आँकड़ों के अनुसार बिहार की कुल जनसंख्या 10,40,99,452 है। इसमें पुरुषों की संख्या 5,42,78,157 (52.14%) है, जबकि महिलाओं की संख्या 4,98,21,295 (47.86%) है।
- कुल जनसंख्या के संदर्भ में बिहार देश में तीसरे स्थान पर है। यहाँ देश की कुल जनसंख्या का 8.60% जनसंख्या निवास करती है।
- सर्वाधिक जनसंख्या वाला ज़िला पटना (58,38,465) है, जबकि न्यूनतम जनसंख्या वाला ज़िला शेखपुरा (6,36,342) है।

सर्वाधिक जनसंख्या वाले ज़िले			न्यूनतम जनसंख्या वाले ज़िले		
क्र.स.	ज़िला	जनसंख्या	क्र.स.	ज़िला	जनसंख्या
1.	पटना	58,38,465	1.	शेखपुरा	6,36,342
2.	पूर्वी चंपारण	50,99,371	2.	शिवहर	6,56,246
3.	मुज़फ्फरपुर	48,01,062	3.	अरवल	7,00843
4.	मधुबनी	44,87,379	4.	लखीसराय	10,00,912
5.	गया	43,91,418	5.	जहानाबाद	11,25,313

ग्रामीण जनसंख्या (Rural population)

- कुल जनसंख्या: 9,23,41,436 (88.71%)
- पुरुष जनसंख्या: 4,80,73,850
- महिला जनसंख्या: 4,42,67,586
- सर्वाधिक ग्रामीण जनसंख्या वाला ज़िला पूर्वी चंपारण (46,98,028) है, जबकि न्यूनतम ग्रामीण जनसंख्या वाला ज़िला शेखपुरा (5,27,340) है।

7 बिहार : खनिज संसाधन

(Bihar: Mineral Resources)

सामान्यत: खनिज से तात्पर्य ऐसे भौतिक पदार्थ से होता है, जिसे 'खान' से खोदकर निकाला जाता है। अगर हम खनिज शब्द का संधि-विच्छेद करते हैं तो खनि + ज अर्थात् संस्कृत शब्द 'खनि' का अर्थ होता है– 'खोदना' या 'खुदा हुआ' या 'खान' एवं 'ज' का अर्थ होता है उत्पन्न होने वाला या जन्म लेने वाला। इस तरह संयुक्त रूप से खनिज शब्द का अर्थ 'खान से उत्पन्न' होता है। अंग्रेजी में खनिज को मिनरल (Mineral) कहा जाता है।

किसी भी राज्य या प्रदेश के विकास क्रम में खनिज संसाधनों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। एक समय था जब बिहार खनिज संसाधन के उत्पादन और भंडारण के लिहाज से अग्रणी राज्यों में शामिल था लेकिन वर्ष 2000 में विभाजन के बाद खनिज संसाधनों का अधिकांश हिस्सा झारखंड में चला गया। परंतु वर्तमान में भी बिहार में कई प्रकार के धात्विक एवं अधात्विक खनिज पाए जाते हैं। बिहार का दक्षिण-पश्चिम भाग खनिज भंडार के मामले में शेष भाग से आगे है। भौगोलिक परिस्थिति के कारण बिहार के दक्षिण-पश्चिमी ज़िलों में अनेक प्रकार की खनिज संपदाओं का भंडार पाया जाता है।

बिहार में विभाजन से पूर्व कोयला, बॉक्साइट, अभ्रक, तांबा, लौह अयस्क, ग्रेफाइट इत्यादि का प्रचुर भंडार था लेकिन ये क्षेत्र झारखंड में चले जाने के कारण इन खनिजों का सीमित स्रोत रह गया है। वहीं दूसरी ओर वर्तमान बिहार में चीनी मिट्टी, पायराइट, चूना पत्थर, क्वार्ट्ज, फेल्सपार, स्लेट, सोना, शोरा तथा सजावटी ग्रेनाइट इत्यादि खनिज पदार्थ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। पायराइट के मामले में भारत में बिहार ही एक ऐसा राज्य है जहाँ पायराइट का उचित भंडार मिलता है। धात्विक खनिज के रूप में बिहार में बॉक्साइट और सोने का अच्छा भंडार है। खड़गपुर की पहाड़ियाँ बॉक्साइट के स्रोत हैं एवं जमुई ज़िले का सोनो क्षेत्र का करमटिया स्थान सोने का बड़ा भंडार रखता है। अधात्विक खनिज के रूप में बिहार के रोहतास ज़िले में चूना पत्थर और पायराइट; जमुई ज़िले में अभ्रक; भागलपुर, बाँका में चीनी मिट्टी; जमुई, गया और नवादा में क्वार्ट्ज; बेगूसराय, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, पूर्वी चंपारण एवं सारण में शोरा तथा मुंगेर में स्लेट खनिज प्रचुर मात्रा में है।

बिहार के प्रमुख खनिज (Major Minerals of Bihar)

बिहार में पाए जाने वाले खनिजों का विवरण निम्नलिखित है–

शोरा	❑ बिहार में शोरा, सोडियम नाइट्रेट और पोटैशियम के रूप में पाया जाता है। बिहार शोरे का पुराना उत्पादक रहा है और ब्रिटिश काल में ईस्ट इंडिया कंपनी शोरे का उत्पादन करके इसका निर्यात किया करता था। ❑ बिहार में शोरा मुजफ्फरपुर, मुंगेर, सारण, दरभंगा तथा बेगूसराय आदि ज़िलों में मिलता है। शोरे का प्रयोग मुख्यत: विस्फोटक निर्माण में किया जाता है।
चूना पत्थर	❑ चूना पत्थर बिहार के पश्चिमी भाग में विंध्यन शैल समूहों में भारी जमाव के रूप में पाया जाता है। बिहार में चूना पत्थर का प्रयोग सीमेंट के निर्माण में कच्चे माल के रूप में किया जाता है। ❑ बिहार में गुणवत्तायुक्त उत्तम श्रेणी का चूना पत्थर रोहतास की पहाड़ियों, कैमूर पठार तथा मुंगेर में मिलता है। रोहतास में यह मुख्यत: सोन घाटी के पश्चिम में पाया जाता है तथा इस ज़िले में चूना पत्थर की असीमित उपलब्धता के कारण यहाँ सीमेंट के दो बड़े कारखाने भी हैं। रोहतास ज़िला में चूना पत्थर का कुल अनुमानित भंडार लगभग 21.085 मिलियन टन है।
पायराइट	❑ भारत में बिहार ही एकमात्र ऐसा राज्य है जहाँ पायराइट का उचित भंडार है। भारतीय खनिज ब्यूरो (Indian Mineral Bureau) की रिपोर्ट के अनुसार देश का 95 प्रतिशत पायराइट का संचित भंडार बिहार में है और बिहार देश में अकेला 95% पायराइट का उत्पादन भी करता है। ❑ पायराइट गंधक का स्रोत होता है एवं इसका उपयोग पेट्रोलियम शोधन, सुपर फॉस्फेट, सल्फर एसिड, रेयोन, ठोस रबड़, चीनी बनाने तथा उर्वरक उद्योग में किया जाता है। रोहतास के अमझौर में केंद्रीय सार्वजनिक उपक्रम के रूप में 'पायराइट फॉस्फेट एंड केमिकल्स लिमिटेड' (PPCL) की स्थापना की गई, जहाँ इस खनिज को उपयोग में लाकर बड़े पैमाने पर उर्वरक का उत्पादन किया जाता है।
अभ्रक	❑ बिहार में अभ्रक की पेटी का विस्तार नवादा ज़िले के पूर्वी भाग से शुरू होकर झारखंड राज्य के गिरीडीह ज़िले तक है। इसके अलावा अभ्रक का निक्षेप बिहार राज्य में जमुई ज़िला के चकाई, बटिया एवं चरका पत्थर क्षेत्र में भी देखने को मिलता है। ❑ बिहार एवं झारखंड में विश्व के सबसे उच्च कोटि का रूबी अभ्रक मिलता है। बिहार में अभ्रक का निक्षेप गया ज़िले में भी है। ❑ अभ्रक का उपयोग वर्तमान में रबड़ उद्योग, पेंट उद्योग, इलेक्ट्रॉनिक उद्योग के अलावा विद्युत एवं ताप के कुचालक उपकरणों के रूप में किया जाता है।

10 बिहार : परिवहन एवं संचार
(Bihar : Transport and Communication)

किसी भी राज्य के विकास व संवृद्धि के लिये वहाँ एक उपयुक्त परिवहन एवं संचार प्रणाली का होना अत्यंत आवश्यक होता है। हालाँकि इस प्रणाली की सघनता क्षेत्र-विशेष रूप से भौगोलिक व जलवायविक कारकों से प्रभावित होती है, विशेषकर सड़क। विगत दशक में बिहार की सड़कों की स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। बिहार में परिवहन के साधनों में रेल,वायु तथा जल परिवहन प्रमुख हैं।

अधिसंरचना (Infrastructure)

- गत दशक में बिहार में भौतिक अधिसंरचना को काफी मज़बूत किया गया। वर्ष 2011–12 से 2018–19 के बीच परिवहन क्षेत्र की वृद्धि दर 11.0 प्रतिशत थी। वर्ष 2011–12 में सकल राज्य घरेलू उत्पाद में परिवहन क्षेत्र का योगदान ₹ 11,236 करोड़ थ जो 2018–19 में ₹ 24,692 करोड़ हो गया। इसका मुख्य कारण भारी सार्वजनिक निवेश है जो 2012–13 के ₹ 5988 करोड़ से तिगुने से भी अधिक होकर 2019–20 में ₹ 18,677 करोड़ हो गया।
- वर्ष 2008 से 2017 के बीच अतिरिक्त सड़क निर्माण (1,30,799 किमी) के लिहाज़ से बिहार का देश में छठा स्थान था। बिहार में राष्ट्रीय उच्चपथों की लंबाई विगत वर्षों के दौरान क्रमशः बढ़ती गई है और 2013–17 के बीच इसका विस्तार पूर्व की अपेक्षा अधिक था।
- राज्य सरकार द्वारा ग्रामीण सड़कों पर निवेश 2012–13 के ₹ 1874 करोड़ ₹ से बढ़कर 2019–20 में ₹ 10,476 करोड़ ₹ पहुँच गया। कुल पक्की सड़कों का हिस्सा 2015 में सिर्फ 35 प्रतिशत था लेकिन 2019 में उनका हिस्सा बढ़कर 75 प्रतिशत हो गया। पक्की ग्रामीण सड़कों की लंबाई 2015 के 48,794 किमी से बढ़कर 2019 में 92,204 किमी हो गई।
- रेलवे लाखों यात्रियों और बड़ी मात्रा में सामानों के लिये परिवहन का किफायती माध्यम है। प्रति लाख आबादी पर उपलब्ध रेलमार्ग के मामले में 2017 में देश के प्रमुख राज्यों के बीच बिहार का तीसरा स्थान था।
- बिहार में वायु परिवहन क्षेत्र में तेज़ (35.6 प्रतिशत) वार्षिक वृद्धि हुई है क्योंकि सकल राज्य घरेलू उत्पाद 2011–12 के ₹ 31 करोड़ से बढ़कर 2018–19 में ₹ 252 करोड़ हो गया। वर्ष 2018–19 में 40.61 लाख यात्रियों ने वायुयात्रा की जबकि 2017–18 में उनकी संख्या 31.11 लाख थी।
- विगत वर्षों के दौरान बिहार और अन्य राज्यों में दूरसंचार के क्षेत्र में जबर्दस्त वृद्धि दर्ज हुई है और दूरभाष घनत्व तेज़ी से बढ़ता गया है। अभी बिहार में ग्रामीण दूरभाष घनत्व के लिहाज़ से 46 कनेक्शन प्रति 100 व्यक्ति है। वहीं, राज्य में शहरी दूरभाष घनत्व 149 कनेक्शन प्रति 100 व्यक्ति है।
- मार्च 2018 तक बिहार में कुल 9084 डाकघर मौजूद थे जिनमें से 8625 (94.9 प्रतिशत) ग्रामीण क्षेत्रों में थे और 459 (5.1 प्रतिशत) शहरी क्षेत्रों में। व्यापक डाक नेटवर्क के जरिये अनेक वित्तीय सेवाएँ उपलब्ध कराई जा रही हैं। बिहार में डाकघर बैंक के 272 लाख खाताधारी हैं जिनका पूरे देश में 7.3 प्रतिशत हिस्सा है। बिहार में डाकघर बैंकों में कुल बकाया शेष ₹ 92,810 करोड़ था जो संपूर्ण भारत का 15.5 प्रतिशत है।

सड़क नेटवर्क *(Road Network)*

- भारत में लगभग 58.98 लाख किमी. लंबा सड़क नेटवर्क है जिसका विश्व में दूसरा स्थान है। इसमें राष्ट्रीय उच्चपथ, तीव्रगामी पथ, राज्य उच्चपथ, अन्य ज़िला पथ और ग्रामीण पथ शामिल हैं।
- सड़क नेटवर्क किसी भी क्षेत्र विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ग्रामीण क्षेत्रों को नज़दीकी शहरी या अर्ध-शहरी केंद्रों से जोड़कर यह काफी अवसर देता है, बाज़ार के लिये पहुँच उपलब्ध कराता है और इस प्रकार आर्थिक गतिविधि को बढ़ावा देने में मदद करता है।
- बिहार में 2,09,549 किमी. लंबा सड़क नेटवर्क है, जिसमें 4839 किमी. राष्ट्रीय उच्चपथ और 4006 किमी. राज्य उच्चपथ शामिल हैं।
- वर्ष 2008 से 2017 के बीच सड़क नेटवर्क का सर्वाधिक 3,52,603 किमी. विस्तार महाराष्ट्र में हुआ और उसके बाद 1,77,851 किमी. मध्य प्रदेश में और 1,68,127 किमी. उत्तर प्रदेश। इस अवधि में अतिरिक्त सड़क निर्माण (1,30,799 किमी.) के लिहाज़ से बिहार का देश में छठा स्थान था।
- भारत में प्रति लाख जनसंख्या पर पथ घनत्व 386 वर्ग किमी. हो गया, लेकिन बिहार में पथ घनत्व सबसे कम मात्र 181 किमी. प्रति लाख जनसंख्या था, जबकि संपूर्ण भारत के स्तर पर 386 किमी. था।
- राज्य में कुल 2,09,549 किमी. सड़कों में से 1,17,573 किमी. सड़कें पक्की थीं। राष्ट्रीय उच्चपथ, राज्य उच्चपथ और अन्य लोक निर्माण विभाग पथ पूरी तरह पक्के थे, जबकि 52 प्रतिशत ग्रामीण पथ, 43 प्रतिशत शहरी पथ और 20 प्रतिशत अन्य परियोजना पथ 2017 तक कच्चे थे। इस प्रकार कुल 92,000 किमी. सड़कें अभी भी पक्की नहीं हैं। चूँकि बिहार मुख्यतः ग्रामीण राज्य है। इसलिये कुल सड़कों का लगभग 80 प्रतिशत हिस्सा ग्रामीण पथों के तहत आता है।

6 बिहार : वन एवं वन्यजीव अभयारण्य
(Bihar : Forest and Wildlife Sanctuary)

सामान्य अवधारणाओं के अनुसार, धरातल पर पाए जाने वाले पेड़, पौधे, घास, झाड़ियाँ एवं लताओं के समूह को वन कहा जाता है। बिहार एक कृषि प्रधान राज्य है और यहाँ की जलवायु मानसूनी है। सघन जनसंख्या एवं कृषि भूमि की अधिकाधिक मांग होने के कारण यहाँ वन क्षेत्र का विस्तार कम हो पाया है। दूसरी बात यह भी है कि बिहार में वन निर्धारण के प्रमुख कारकों में से वर्षा की मात्रा का अहम योगदान रहता है जबकि इस मामले में बिहार को अक्सर मानसून के साथ जुआ खेलना पड़ता है। बिहार में जहाँ एक ओर भीषण बाढ़ के कारण होने वाले कटाव वनों के विकास को प्रभावित करते हैं, वहीं दूसरी ओर शिवालिक श्रेणी एवं कैमूर के पहाड़ी क्षेत्रों की ऊँचाई भी वनस्पतियों की सघनता तथा विकास को प्रभावित करती हैं।

बिहार में वन क्षेत्र का वितरण
(Distribution of Forest Area in Bihar)

बिहार का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 94,163 वर्ग किमी. है और यह उपोष्ण जलवायु क्षेत्र में अवस्थित है। भारतीय वन रिपोर्ट 2019 के अनुसार राज्य में कुल घोषित वन क्षेत्र 7305.99 वर्ग किमी. है जो कुल भौगोलिक क्षेत्र का मात्र 7.76 प्रतिशत है। ये प्राकृतिक वन पश्चिमी चंपारण, कैमूर, रोहतास, औरंगाबाद, गया, जहानाबाद, नवादा, नालंदा, मुंगेर, बांका और जमुई जिलों में फैले हुए हैं। पश्चिमी चंपारण को छोड़कर उत्तर बिहार प्राकृतिक वनों से रहित है। शिवालिक के तराई क्षेत्र में पश्चिमी चंपारण जिले में प्राकृतिक साल के वन मिलते हैं। इसके अलावा दक्षिण बिहार में कैमूर, रोहतास, औरंगाबाद, गया, जमुई, मुंगेर और बाँका जिले में साल के वन प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।

बिहार की प्राकृतिक वनस्पति में पर्णपाती किस्म के वनों की बहुलता है। वर्षा वितरण की असमानता के कारण यहाँ आर्द्र एवं शुष्क दोनों प्रकार के वन पाए जाते हैं। बिहार में वनों का वर्गीकरण हम निम्नलिखित तरीके से कर सकते हैं-

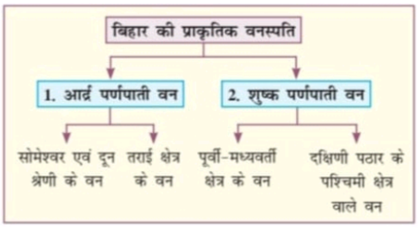

1. *आर्द्र पर्णपाती वन (Moist Deciduous Forest)*

सामान्यत: इस प्रकार के वन वैसे क्षेत्रों में पाए जाते हैं जहाँ वार्षिक वर्षा की मात्रा 120 सेमी. से अधिक हो। आर्द्र पर्णपाती वन के अंतर्गत सोमेश्वर एवं दून श्रेणी के वन तथा तराई क्षेत्र के वन आते हैं। सोमेश्वर एवं दून श्रेणी के वनों का विस्तार मुख्यत: पश्चिमी चंपारण में है। इस क्षेत्र में 160 सेमी. से भी अधिक वर्षा होती है। यहाँ की उच्च भूमियों एवं पहाड़ी ढालों पर पाए जाने वाले वनों में साल, सेमल, खैर, शीशम इत्यादि वृक्षों की प्रधानता है। सोमेश्वर एवं दून श्रेणियों में ऊँचाई के कारण सवाना प्रकार की वनस्पतियाँ भी देखने को मिलती हैं।

तराई क्षेत्र के वन भारत-नेपाल सीमा से सटे क्षेत्रों में पाए जाते हैं। तराई क्षेत्र का उत्तरी-पश्चिमी तथा उत्तरी-पूर्वी भाग इस प्रकार के वनों से आच्छादित है। निम्न दलदली भूमि में पाई जाने वाली वनस्पतियाँ यहाँ अधिकांश रूप से पाई जाती हैं जैसे- घास, हाथी घास, नरकट, झाड़, सवई, बाँस इत्यादि। इस प्रकार के वन पूर्णिया, किशनगंज, अररिया एवं सहरसा जिलों में संकीर्ण पट्टी के रूप में पाए जाते हैं, जबकि सहरसा तथा पूर्णिया के उत्तर सीमांत क्षेत्रों में साल वृक्षों के वनों की पट्टियाँ मिलती हैं। शिवालिक के तराई क्षेत्र में पश्चिमी चंपारण जिले में प्राकृतिक साल के वनों की प्रधानता है।

2. *शुष्क पर्णपाती वन (Dry Deciduous Forest)*

बिहार में शुष्क पर्णपाती वनों का विस्तार राज्य के पूर्वी मध्यवर्ती भाग एवं दक्षिणी पठार के पश्चिमी भाग में है। ये वैसे क्षेत्र हैं जहाँ 120 सेमी. से कम वार्षिक वर्षा होती है। शुष्क पर्णपाती वनों में अमलतास, आबनूस, आँवला, शीशम, महुआ, खैर, पलाश, आसन इत्यादि के वृक्ष बहुतायत में पाए जाते हैं। शुष्क पर्णपाती वन बिहार के जमुई, शेखपुरा, बाँका, नवादा, कैमूर, रोहतास, गया तथा औरंगाबाद जिले के पठारी क्षेत्रों में विस्तृत हैं।

रिकॉर्डेड वन क्षेत्रफल के अनुसार राज्य में 6877 वर्ग किमी. वन क्षेत्र है जो इसके भौगोलिक क्षेत्र का 7.30% है। सुरक्षा की दृष्टि से बिहार के वनों को तीन श्रेणियों में विभक्त किया गया है- **आरक्षित वन क्षेत्र, संरक्षित वन क्षेत्र** एवं **अवर्गीकृत वन क्षेत्र।** बिहार में आरक्षित वन क्षेत्र का विस्तार 693 वर्ग किलोमीटर (10.08%) के क्षेत्रफल में है, वहीं संरक्षित वन क्षेत्र 6,183 वर्ग किलोमीटर (89.91%) में फैला हुआ है। 1 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल (0.01%) में पाए जाने वाले वन अवर्गीकृत वन क्षेत्र में आते हैं। इसके अलावा बिहार राज्य वन विभाग की रिपोर्ट, 2019 में इस बात की पुष्टि की गई है कि बिहार में पाए जाने वाले कुल प्रतिशत क्षेत्रफल में 3.92 प्रतिशत (3692.54 वर्ग किमी.) खुले वन, 3.48 प्रतिशत (3280.32 वर्ग किमी.) मध्यम सामान्य वन, 0.36 प्रतिशत (333.13 वर्ग किमी.) अतिसघन वन तथा 0.27 प्रतिशत (249.88 वर्ग किमी.) में झाड़ीदार वनों का विस्तार है।

4

बिहार : अपवाह तंत्र एवं सिंचाई
(Bihar : Drainage System and Irrigation)

बिहार में विद्यमान अपवाह तंत्र के अंतर्गत मुख्यत: नदियों, झीलों, आर्द्रभूमि, जलप्रपात तथा विभिन्न गर्म जलकुंडों को शामिल किया जाता है। इस अपवाह तंत्र के अंतर्गत विभिन्न नदियों से निकाली गई नहरों तथा नलकूपों, तालाबों एवं कुओं के माध्यम से संपूर्ण प्रदेश में सिंचाई की जाती है।

नदियाँ (Rivers)

बिहार में प्रवाहित होने वाली प्रमुख नदियाँ निम्नलिखित हैं–

गंगा

- मूल रूप से यह नदी भागीरथी के नाम से गंगोत्री हिमनद (उत्तराखंड) से निकलती है। देवप्रयाग (उत्तराखंड) में भागीरथी व अलकनंदा के संगम के बाद इसे गंगा के नाम से जाना जाता है।
- बिहार में इस नदी की लंबाई लगभग 445 किलोमीटर है, हालाँकि, भारत में इसकी कुल लंबाई लगभग 2525 किलोमीटर है।
- बिहार में यह नदी (पश्चिम से पूर्व के क्रम में) मुख्यत: बक्सर, भोजपुर, सारण, पटना, वैशाली, समस्तीपुर, बेगूसराय, लखीसराय, खगड़िया, मुंगेर, भागलपुर तथा कटिहार (कुल 12 ज़िलों) से प्रवाहित होती है। पटना ज़िले में गंगा की लंबाई सर्वाधिक है।
- यह नदी चौसा (बक्सर) के पास बिहार में प्रवेश करती है तथा कटिहार (बिहार) एवं साहेबगंज (झारखंड) के बीच सीमा बनाते हुए पश्चिम बंगाल में प्रवेश कर जाती है।
- बिहार में इसमें बायीं ओर (उत्तर दिशा) से मिलने वाली नदियों में घाघरा, गंडक, बागमती, बलान, बूढ़ी गंडक, कोसी, कमला तथा महानंदा प्रमुख हैं।
- इसमें दायीं ओर (दक्षिण दिशा) से मिलने वाली नदियों में सोन, कर्मनाशा, पुनपुन तथा किऊल प्रमुख हैं।

घाघरा (सरयू) नदी

- इस नदी का उद्गम तिब्बत के पठार पर मानसरोवर झील के पास स्थित मापचोचुंग हिमनद (ग्लेशियर) से होता है।
- बिहार में इस नदी की लंबाई मात्र 83 किलोमीटर है। यह दरौली (सीवान ज़िला) के नजदीक बिहार में प्रवेश करती है तथा रिविलगंज (सारण ज़िला) के पास गंगा में मिल जाती है।
- इस नदी को सरयू तथा करनाली के नाम से भी जाना जाता है।

सोन

- यह गंगा में दाहिनी ओर (दक्षिण दिशा) से मिलने वाली प्रमुख नदी है। इस नदी का उद्गम अमरकण्टक (मध्य प्रदेश) से होता है।
- यह रोहतास ज़िले से बिहार में प्रवेश करती है तथा पटना के समीप गंगा नदी में मिल जाती है।
- इसकी बिहार में लंबाई जहाँ कुल 202 किलोमीटर है, वहीं इसकी संपूर्ण लंबाई 784 किलोमीटर है।
- गोपद, कन्हर, उत्तरी कोयल तथा रिहन्द इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ हैं।
- इस नदी पर दक्षिण-पश्चिम बिहार की सबसे बड़ी सिंचाई परियोजना निर्मित है।

कोसी

- यह नदी अपना मार्ग बदलने के लिये कुख्यात है। इस नदी में प्रतिवर्ष आने वाली भीषण बाढ़ के कारण इसे 'बिहार का शोक' कहा जाता है।
- यह नदी सुपौल, सहरसा, मधेपुरा तथा पूर्णिया ज़िलों से प्रवाहित होने के बाद गंगा नदी में मिल जाती है।
- इसका उद्गम गोसाई स्थान (नेपाल) से होता है।
- सनकोसी, ताम्रकोसी, तामूरकोसी, भूतकोसी, लिच्छूकोसी, दूधकोसी, इंद्रावती तथा अरुणकोसी इसकी सहायक नदियाँ हैं।

गंडक

- मूल रूप से नेपाल से निकलने वाली यह नदी भैसालोटन (पश्चिमी चंपारण) के पास बिहार में प्रवेश करती है।
- बिहार में इस नदी की कुल लंबाई 260 किलोमीटर है।
- यह नदी पश्चिमी चंपारण, गोपालगंज, सारण एवं मुजफ्फरपुर ज़िलों से प्रवाहित होते हुए सोनपुर (सारण) व हाजीपुर (वैशाली) के मध्य गंगा नदी में मिल जाती है।
- सप्तगंडकी, कालीगंडक, नारायणी, शालिग्रामी तथा सदानीरा इस नदी के अन्य नाम हैं।

8

बिहार : औद्योगीकरण एवं नियोजन
(Bihar : Industrialization and Planning)

किसी अर्थव्यवस्था के अंतर्गत कच्चे पदार्थों को उचित एवं सुलभ तकनीक के माध्यम से उसके स्वरूप में परिवर्तन लाकर अधिक उपयोगी बना देना तथा निर्मित पदार्थों का उचित तरीकों से रख-रखाव करना इत्यादि उद्योग के अंतर्गत आता है। इनका विस्तृत रूप औद्योगीकरण कहलाता है।

- किसी अर्थव्यवस्था में औद्योगीकरण एवं नियोजन हेतु निम्नलिखित की आवश्यकता होती है–
  - सुगमतापूर्वक कच्चे माल की प्राप्ति
  - अत्यधिक कुशल श्रमिकों की आवश्यकता
  - उचित आवागमन मार्ग एवं परिवहन का साधन
  - उचित मात्रा में पूंजी की आवश्यकता
  - निर्मित वस्तुओं की बिक्री हेतु विस्तृत बाज़ार की सुविधा
- अर्थव्यवस्था के अंतर्गत निर्माण-विनिर्माण समेत उद्योग को द्वितीयक क्षेत्र कहा जाता है।
- बिहार में सकल घरेलू उत्पादन में उद्योग (द्वितीयक) क्षेत्र का हिस्सा लगभग 19 प्रतिशत है। जबकि भारत में औसतन इसका हिस्सा लगभग 31 प्रतिशत है। इस तरह अगर सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाए तो बिहार में आधारभूत आवश्यकताओं की कमी के चलते उद्योग क्षेत्र काफी पिछड़ा हुआ है।

उद्योगों की स्थिति (Status of Industries)

बिहार में कृषि-आधारित और कृषीतर, दोनों प्रकार के कारखानों और चालू कारखानों की वार्षिक वृद्धि दर संपूर्ण भारत के औसत से अधिक थी। पिछले 10 वर्षों में बिहार में चालू कृषि-आधारित कारखानों की वृद्धि दर 16.4 प्रतिशत थी जबकि संपूर्ण भारत के स्तर पर मात्र 3.3 प्रतिशत थी। भारत और बिहार में चलने वाले उद्योगों के आकार और पैमाने का निर्णय लेने के कुछ महत्त्वपूर्ण सूचक हैं- स्थिर पूंजी की मात्रा, कार्यशील पूंजी की मात्रा, कर्मियों की संख्या, निर्गत मूल्य तथा शुद्ध मूल्यवर्धन। इन सूचकों के आधार पर कुछ रोचक निष्कर्ष सामने आते हैं।

- सर्वप्रथम, कार्यशील पूंजी की वृद्धि को छोड़ दें तो उक्त सारे सूचक संपूर्ण भारत के स्तर की तुलना में बिहार में अधिक तेज़ी से बढ़े।
- दूसरे, 2015–16 और 2016–17 के बीच बिहार में चालू कारखानों की संख्या में थोड़ी गिरावट आई लेकिन स्थिर पूंजी में 82 प्रतिशत और कार्यशील पूंजी में 43 प्रतिशत वृद्धि हुई।
- तीसरे 2015–16 और 2016–17 के बीच निर्गत मूल्य और शुद्ध मूल्यवर्धन में थोड़ी वृद्धि हुई है, जबकि पहले भी कहा गया कि चालू कारखानों की संख्या में थोड़ी कमी आई है।
- चौथे, 2015–16 और 2016 – 17 के बीच बिहार में नियोजित लोगों की संख्या में लगभग 3 प्रतिशत कमी आई है। संयुक्त रूप से ये चारों सूचक यह बताते हैं कि सामान्य धारणा के विपरीत बिहार में पूंजी-प्रधान उद्योगों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ रही है।

देश के औद्योगिक उत्पादन में बिहार का योगदान अत्यंत सीमित रहा है। वर्ष 2016–17 में देश के औद्योगिक क्षेत्र के कुल सकल मूल्यवर्धन में बिहार का योगदान मात्र 0.5 प्रतिशत था। हाल के वर्षों में यह अनुपात और भी घटकर लगभग 0.3 प्रतिशत रह गया। बिहार के सकल निर्गत मूल्य में सकल मूल्यवर्धन का हिस्सा भी 13.4 प्रतिशत ही था, जो औद्योगिक उत्पादन के लिहाज़ से सर्वोत्तम प्रदर्शन वाले राज्य महाराष्ट्र में 9.1 प्रतिशत अंक कम है। राष्ट्रीय स्तर पर यह अनुपात 18.8 प्रतिशत है। बिहार में चालू कारखाने अपेक्षाकृत छोटे आकार के हैं।

बिहार में प्रति कारखाना औसतन 40.0 लोग नियोजित हैं, जो संपूर्ण भारत के औसत (76.7 श्रमिक) का लगभग आधा और हरियाणा में किसी कारखाने की औसत रोज़गार देने की क्षमता (120.7 श्रमिक) का एक-तिहाई है। बिहार में श्रमिकों की निम्न उत्पादकता के कारण उनकी खपत का स्तर भी निम्न रहता है। जैसे, बिहार में किसी कारखाने में श्रमिक को मज़दूरी, वेतन और बोनस के रूप में प्रति वर्ष औसत ₹1.296 लाख प्राप्त होते हैं, जो देश में सर्वोत्तम प्रदर्शन वाले दो राज्यों-झारखंड (₹3.738 लाख) और महाराष्ट्र (₹3.44 लाख) का महज एक-तिहाई है। राष्ट्रीय स्तर पर प्रति वर्ष औसत खपत ₹2.528 लाख है।

बिहार में औद्योगिक क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से निम्न निवेश, निम्न पूंजी निर्माण और निवेश पर निम्न प्रतिफल की समस्या से ग्रस्त रहा है। हालाँकि राज्य सरकार द्वारा सतर्क नीति निर्माण और संस्थागत हस्तक्षेप विगत पंच वर्षों के दौरान राज्य में निवेश के वातावरण में सुधार लाने में मददगार रहे हैं। वार्षिक औद्योगिक सर्वेक्षण के आँकड़ों से पता चलता है कि 2015–16 और 2016–17 के बीच स्थिर पूंजी और कार्यशील पूंजी के स्तर में काफी सुधार हुआ है। यह इस बात का भी स्पष्ट संकेत देता है कि भविष्य में राज्य की आर्थिक विकास प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिहाज़ से औद्योगिक क्षेत्र का विकास सही दिशा में हो रहा है।

कृषि आधारित उद्योग *(Agriculture Based Industries)*

बिहार में मैदानी इलाकों का क्षेत्रफल अधिक होने के फलस्वरूप कृषि पर आधारित उद्योगों की संभावना बढ़ जाती है। लेकिन आधारभूत औद्योगिक संरचना के अभाव में कृषि पर आधारित उद्योग का भी बृहत् मात्रा में विकास नहीं हो पाया है।

वर्तमान में बिहार में निम्नलिखित उद्योग जो कृषि पर आधारित हैं–

- (फूड प्रोसेसिंग उद्योग) खाद्य प्रसंस्करण उद्योग
- चावल मिल उद्योग

5 बिहार : कृषि व पशुपालन (Bihar : Agriculture and Animal Husbandry)

सामान्य परिचय (Generel Introduction)

कृषि व पशुपालन बिहार में आजीविका का प्रमुख साधन है। इस कार्य में लगभग बिहार की (70% से अधिक) कार्यशील जनसंख्या लगी हुई है। यहाँ खाद्यान्न फसलों के अंतर्गत मुख्यतः धान, गेहूँ, मक्का, जौ, ज्वार, रागी, बाजरा, सरसों, अरहर, चना, मसूर तथा नकदी या व्यावसायिक फसलों के अंतर्गत गन्ना, मेस्ता, मखाना, मिर्च, चाय, जूट तथा तंबाकू की कृषि की जाती है। पशुपालन के अंतर्गत मुख्यतः गाय, भैंस, भेड़, बकरी, सूअर, मुर्गीपालन तथा मत्स्यपालन का कार्य किया जाता है।

कृषि बिहार जैसी अर्थव्यवस्थाओं के लिये मुख्य सहारा है जो उनकी खाद्य सुरक्षा, रोजगार और ग्रामीण विकास को सहारा देती है। यह तीन-चौथाई से भी अधिक आबादी को सहारा देती है। रोजगार पैदा कराने के अलावा, यह उद्योगों के लिये कच्चा माल उपलब्ध कराती है, खाद्य आपूर्ति में वृद्धि करती है और गरीबी निवारण में सहायता करती है। राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि क्षेत्र का योगदान 2017–18 में लगभग 20 प्रतिशत था। कुल सकल राजकीय मूल्यवर्धन (जीएसवीए) में फसल क्षेत्र का हिस्सा 2018–19 में 10.64 प्रतिशत था। सीमित भूमि संसाधन, टुकड़ों में बंटी जोतों, और अनियमित वर्षापात के बावजूद राज्य में फसलों और बागवानी का उत्पादन संबंधी प्रदर्शन उत्साहजनक रहा है। वर्ष 2018–19 में बिहार में खाद्यान्नों का उत्पादन 163.12 लाख टन था। बिहार में 2018–19 में कृषि क्षेत्र के सकल मूल्यवर्धन में पशुधन, मछली पालन और जलकृषि का संयुक्त योगदान लगभग 7.10 पतिशत था। फसल उत्पादन, कृषि निवेशों, लागत सामग्रियों तथा मशीनों की खरीद के लिये वित्तीय संसाधनों की मांग बढ़ती रही है। सिंचाई के सुदृढीकरण, बाढ़ से संरक्षण, खाद्य प्रसंस्करण, और डेयरी विकास की परियोजनाओं को शामिल करने के लिये कृषि विभाग और सहवर्ती क्षेत्रों को तृतीय कृषि रोडमैप, 2017–22 के लिये कुल ₹ 1.54 लाख करोड़ आबंटित किये गए हैं। किसान समुदाय को जीविका की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिये राज्य सरकार जलवायु के झटके झेलने में सक्षमकृषि को बढ़ावा देने, प्रौद्योगिकी संबंधी सहायता देने और आधुनिक लागत सामग्रियों की उपलब्धता में सुधार लाने के लिये अनेक योजनाएँ चला रही है।

बिहार जैसे राज्यों में आर्थिक गतिविधियाँ कृषि और सहवर्ती क्षेत्रों के विकास के साथ घनिष्ठता से जुड़ी हुई हैं क्योंकि खाद्य और पोषण संबंधी सुरक्षा से इनका मजबूत संबंध है। यह क्षेत्र खाद्य पदार्थों की आपूर्ति ही नहीं बढ़ाता है, रोजगार के अवसर भी पैदा करता है, जीविका के अवसरों में भी सुधार लाता है और गरीबी निवारण भी करता है। विगत दो दशकों में बिहार की अर्थव्यवस्था में ढाँचागत बदलाव आया है, जो सकल राज्य घरेलू उत्पाद की क्षेत्रगत संरचना में कृषि क्षेत्र से सेवा क्षेत्र की ओर शिफ्ट से स्पष्ट होता है। तृतीयक क्षेत्र के हिस्से में वृद्धि के कारण राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि क्षेत्र का सापेक्ष हिस्सा 2000–01 के 35.8 प्रतिशत से घटकर 2017–18 में 19.7 प्रतिशत रह गया, ऐसा तृतीयक क्षेत्र के हिस्से में वृद्धि के कारण हुआ हालाँकि इसका जारी महत्त्व इस बात में निहित है कि राज्य की 70 प्रतिशत से भी अधिक आबादी कृषि कार्यों में लगी है। वर्ष 2000 में राज्य के विभाजन के बाद अधिकांश खनिज संसाधन झारखंड वाले क्षेत्र में चले गए। अतः सक्षम कृषि व्यवस्था बिहार में समग्र आर्थिक विकास की विकासमूलक रणनीति का एक महत्त्वपूर्ण अंग बन जाती है। कृषि क्षेत्र में उच्च और टिकाऊ विकास हासिल करना खेती में और खेती के बाद रोज़गार के अवसर पैदा करने तथा आमदनी, खास कर गरीबों की आमदनी बढ़ाने, दोनों के लिहाज़ से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

समुद्रतट-विहीन राज्य बिहार में देश की लगभग 8.6 प्रतिशत आबादी रहती है जबकि यहां देश का 3.8 प्रतिशत कृषि-भूमि ही मौजूद है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राज्य का जनसंख्या घनत्व देश में सबसे अधिक– 1106 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है जबकि देश का जनसंख्या घनत्व 382 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी ही है। कुल मिलाकर बढ़ती आबादी, सीमित कृषि-भूमि, टुकड़ों में बँटी जोतें, लागत सामग्रियों की ऊँची लागत, अनियमित वर्षा, बाढ़ और भूमि का क्षरण बिहार में कृषि क्षेत्र के लिये गंभीर चुनौतियाँ प्रस्तुत करते हैं।

कृषि की संभावना को साकार करने के लिये राज्य सरकार ने कृषि रोडमैप के तहत राज्य में फसलों, पशुधन, मछली उत्पादन, दूध उत्पादन और सिंचाई क्षेत्र के विकास के लिये अनेक कार्यक्रम शुरू किये हैं। राज्य सरकार के कृषि रोडमैप का मुख्य उद्देश्य बढ़ती आबादी के लिये खाद्य एवं पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिहाज़ से लाभप्रद और टिकाऊ खेती की उपलब्धि के लिये सक्षमकारी वातावरण निर्मित करना है। कृषक समुदाय के लिये जीविका की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिहाज़ से पर्यावरण के झटके झेलने में सक्षमकृषि व्यवहारों को बढ़ावा देने, प्रौद्योगिकी संबंधी सहायता उपलब्ध कराने और आधुनिक लागत सामग्रियों की उपलब्धता में सुधार लाने के लिये राज्य सरकार द्वारा अनेक योजनाएँ चलाई जा रही हैं।

बिहार में सकल राजकीय मूल्यवर्धन में कृषि एवं सहवर्ती क्षेत्रों का योगदान 2013–14 के 22.8 प्रतिशत से घटकर 2018–19 में 19.3 प्रतिशत रह गया। वर्ष 2018–19 में सकल राजकीय मूल्यवर्धन में सर्वाधिक 10.6 प्रतिशत योगदान फसल क्षेत्र का था और सबसे कम 1.5 प्रतिशत मत्स्याखेट एवं जलकृषि क्षेत्र का। पशुधन क्षेत्र बिहार में एक महत्त्वपूर्ण हिस्से के बतौर उभर रहा है, जो राज्य के सकल राजकीय मूल्यवर्धन में इसके बढ़ते योगदान– 2013–14 के 5.4 प्रतिशत से 2018–19 में 5.6 प्रतिशत से स्पष्ट है। सकल राजकीय मूल्यवर्धन में फसल क्षेत्र का हिस्सा 2018–19 में 10.6 प्रतिशत था लेकिन 2013–14 के 14.2 प्रतिशत से